पाठ 13
खूँटे का घोड़ा

आइए सीखें–

● लोककथा को समझना। ● मुहावरों की समझ। ● विराम चिह्नों का प्रयोग। ● परोपकार और सहयोग के गुणों का विकास। ● बुद्धि कौशल और सूझ–बूझ से बिगड़ी बात को बनाना।

बातों सी मीठी, कहानी सी झूठी। घड़ी–घड़ी विश्राम, जाने सीताराम। शक्कर का घोड़ा, शकरपारे की लगाम। ऐसे–ऐसे बुधिया की नानी, एक दिन कहने लगी कहानी।

एक था बंजारा। बड़ा ही सीधा, नेक और दयालु। उसके पास था एक ऊँचा–पूरा, तेज तर्रार घोड़ा। बंजारा घोड़े को बहुत प्यार करता था। एक दिन की बात है। .....

इतना कहकर नानी हो गई चुप। बुधिया के मन में मच गई खलबली। उसने पूछा– ''बताओ न नानी! क्या हुआ उस दिन?'' नानी ने खाँसकर गला साफ किया और बोली–

उस दिन बंजारा घोड़े पर बैठकर कहीं जा रहा था। उसका रास्ता गुजरता था जंगल से। जंगल में था खूब बड़ा तालाब। बंजारे ने सोचा, चलूँ, घोड़े को पानी पिला दूँ। वह तालाब के किनारे गया और घोड़े ने पिया जी भरकर पानी। बंजारा चलने लगा तभी उसे एक गड्ढे में एक बूढ़ा आदमी दिखाई दिया। बंजारे को देखकर उस बूढ़े आदमी ने आवाज दी अरे भाई! मुझे यहाँ से निकालो। अगर मैं यहीं पड़ा रहा तो भूखा–प्यासा मर जाऊँगा। बंजारे को दया आ गई। उसने बूढ़े आदमी को गड्ढे से बाहर निकाला।

बूढ़े आदमी ने कहा– ''तुम भले आदमी हो। मैं पास में ही रहता हूँ। लोग मुझे बाबा कहकर बुलाते हैं, घास काटते समय धोखे से इस गड्ढे में गिर पड़ा था। तुम न आते तो जाने कब तक इसी में पड़ा रहता। अगर कोई मुश्किल आ पड़े तो मेरे पास जरूर आना। मैं तुम्हारी मदद करूँगा।'' इतना कहकर बाबा अपनी झोपड़ी की ओर चला गया। बंजारे ने भी अपना रास्ता पकड़ा।

इतना कह नानी दम भरने को रुक गई। बुधिया बोली– ''काम तो बंजारे ने अच्छा किया। दूसरों की मदद करना अच्छी बात है। फिर आगे क्या हुआ? क्या बंजारे को भी उस बूढ़े आदमी की मदद की जरूरत पड़ी?'' नानी ने कहा– ''थोड़ा रुको, आगे क्या हुआ? कुछ ठहरकर बताती हूँ।''

एक बार की बात है। बंजारे को अपने डेरे पर लौटते समय रात हो गई। सूना रास्ता, साँय–साँय चलती हवा और बियाबान जंगल। बंजारा चौकन्नी निगाह किए घोड़े पर बैठा चला जा रहा था। अचानक क्या देखा कि पेड़ के नीचे एक आदमी खड़ा है। उस आदमी ने बंजारे को टोका– ''अरे! इतनी रात में कहाँ जा रहे हो? जंगल की राह। उस पर अकेले कहीं कोई खतरनाक जानवर मिल जाए तो क्या करोगे?''

बंजारे ने कहा– ''करुँ भी तो क्या? डेरे पर तो जाना ही होगा।'' वह आदमी बोला– ''मेरा गाँव पास में ही है। चलो मेरे साथ रात भर रुकना, सुबह अपनी राह लेना। बंजारे ने कहा– पर तुम्हें बेकार में परेशानी होगी।'' ''परेशानी की क्या बात? तुम मेरा घर थोड़े ही साथ ले जाओगे।'' उस आदमी ने बंजारे की बात का जवाब दिया।

बंजारा मीठी–मीठी बातें सुनकर उसके साथ हो लिया। उस आदमी ने बंजारे को अपने घर ले जाकर खूब आवभगत की। घोड़े को भी एक खूँटे से बाँधा। दाना खिलाया। बंजारे को खाट पर सुलाया और स्वयं जमीन पर सोया। बंजारा मन में सोचता– 'कितना भला है यह

शिक्षण संकेत :– ● शिक्षक पाठ को लोककथा की शैली में सुनाएँ। ● बच्चों को घुमन्तू (खानाबदोश) जातियों जैसे बंजारा, लोह गाड़िया, नट आदि के बारे में जिनके स्थायी आवास और स्थायी बस्तियाँ नहीं होती हैं, बताएँ। ● वाचन के समय परोपकार, सहयोग, कृतज्ञता आदि मूल्यों और गुणों पर विशेष रूप से चर्चा करें। यह बुन्देली कथा लोक कथा पर आधारित है।

आदमी।' यह सोचते–सोचते बंजारा सो गया चैन की नींद। सबेरे मुर्गे ने बाँग दी तो बंजारा जागा। वह आदमी भी उठा। बंजारे ने हाथ मुँह धोया और दातुन की। अपने घर ठहराने के लिए उस आदमी को धन्यवाद दिया। बंजारा चलने को तैयार हुआ। जैसे ही उसने अपने घोड़े की लगाम को हाथ लगाया वह आदमी चिल्लाया–''अरे! अरे! यह क्या, मेरा घोड़ा कहाँ ले जा रहे हो?'' बंजारा घबराकर बोला– ''तुम्हारा घोड़ा। घोड़ा तो मेरा है।'' वह आदमी डपटकर बोला– ''चुप रहो, यह मेरा घोड़ा है। कल रात को ही तो मेरे खूँटे ने इस घोड़े को जन्म दिया है। खूँटा भी मेरा, घोड़ा भी मेरा।'' बंजारे के तो यह सुनकर होश ही उड़ गए। यह कैसी मुसीबत गले आ पड़ी। बंजारा बोला– ''भाई हँसी मत करो। घोड़ा मेरा है। रात में इसी पर बैठकर तो मैं तुम्हारे घर आया था।''

वह आदमी क्यों मानने वाला था, बोला–''नहीं घोड़ा मेरा हैं।'' दोनों झगड़ने लगे। बंजारा कहता–''घोड़ा मेरा है।'' वह आदमी कहता–''घोड़ा मेरा है।'' दोनों का झगड़ा सुनकर उस आदमी के दोनों पड़ोसी भी आ गए। बंजारे ने उनसे कहा– ''देखों भाइयों कैसा अन्धेर है। यह आदमी मेरे घोड़े को अपना बता रहा है।'' बंजारे को क्या मालूम था कि वह आदमी और उसके दोनों पड़ौसी ठग थे। मिलजुलकर सीधे–सादे लोगों को ठगते थे। उन दोनों ने ठग की हाँ में हाँ मिलाई और बंजारे को डरा–धमकाकर भगा दिया।

बुधिया बोली– ''बेचारा बंजारा! पर नानी उस बंजारे ने अपना घोड़ा पाने के लिए कुछ नहीं किया?'' नानी ने कहा–''सुनती रहो। अभी पूरी कहाँ हुई कहानी। जरा दम ले लूँ तो आगे कहूँ।''

शिक्षण संकेत – शिक्षक बच्चों को बताएँ कि कुछ लोग मीठी–मीठी बातें बनाकर या लालच में डालकर ठग लेते हैं। रुपयों या जेवरों को दूना करना, गड़ा धन दिलाने की कहकर, रेलगाड़ियों में जहरीली या बेहोशी की दवा मिली खाद्य वस्तु खिलाकर लोगों का लूट लिया जाता है। इनसे सावधान रहना चाहिए।

नानी ने आगे की कहानी सुनाई .....

मुसीबत का मारा बंजारा, हैरान–परेशान। क्या करें कहाँ जाए? बंजारे को बूढ़े बाबा की याद आई। वह जंगल में तालाब के पास पहुँचा। बंजारे ने बाबा को पुकारा। बंजारे की आवाज सुनकर बूढ़ा बाबा झट अपनी झोपड़ी से निकल आया। बाबा ने कहा– ''आओ बंजारे भाई! कैसे हो?'' बंजारे ने घोड़ा छीने जाने का सारा किस्सा सुनाया। बाबा बोला–''चिन्ता मत करो। उन ठगों को ऐसा सबक सिखाऊँगा कि जीवन भर याद रखेंगे।''

दूसरे दिन बाबा और बंजारा जा पहुँचे उस गाँव के मुखिया के पास। बंजारे ने सारी घटना मुखिया को बताई और घोड़ा वापिस दिलाने की विनती की। मुखिया ने घोड़े समेत उस ठग को बुलवाया। मुखिया ने ठग से पूछा–''तुमने बंजारे का घोड़ा क्यों ले लिया?'' ठग ने कहा– ''मुखियाजी घोड़ा तो मेरा है। कल रात को ही मेरे खूँटे ने इसे पैदा किया है। इस बात के कई गवाह हैं।'' उसके दोनों पड़ौसी ठगों ने गवाही दी कि हाँ, हाँ, ऐसा ही हुआ।

मुखिया यह सुनकर सोच में पड़ गया। मुखिया जानता था कि ये लोग चोर और ठग हैं पर मिलकर झूठ बोलने और गवाही देने के कारण बचे रहते हैं। बाबा यह सब देख रहा था उसने सोचा मौका अच्छा है। वह झूठ–मूठ सोने लगा। मुखिया ने उसे जगाकर पूछा–''तुम किसलिए आए हो और सो क्यों रहे हो?'' बाबा बोला– ''मुखियाजी, मैं जंगल में एक तालाब के किनारे रहता हूँ। कल रात आपके गाँव का यह आदमी घोड़े पर बैठकर आया। इसने तालाब के पानी में आग लगा दी। जब मैं पानी में लगी आग बुझाने लगा तो इसने मेरी एक हजार अशर्फियाँ चुरा लीं और भाग आया। मेरी अशर्फियाँ दिला दीजिए।'

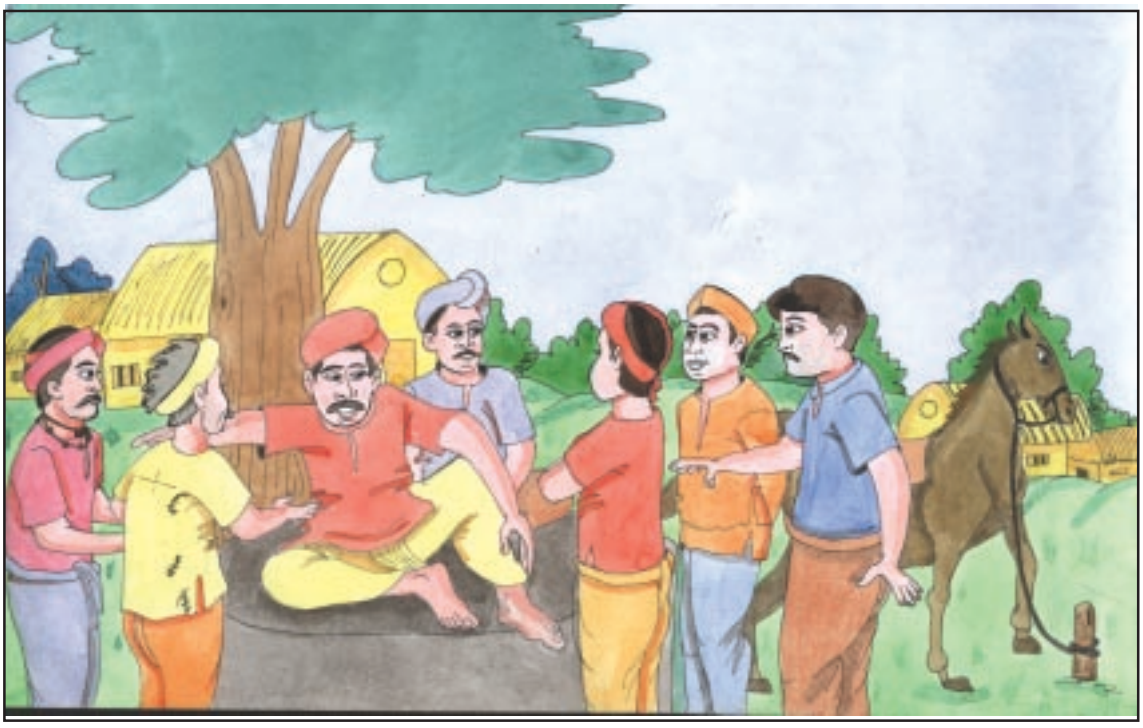

मुखिया बाबा की बात समझ गया। उसने उस ठग से एक हजार अशर्फियाँ देने को कहा। ठग बोला–''मुखिया जी, यह बूढ़ा झूठ बोल रहा है। आप ही बताइए कहीं पानी में आग लगती है?''

बाबा ने कहा–''जब लकड़ी का खूँटा जीते–जागते घोड़े को जन्म दे सकता है तो पानी में आग क्यों नहीं लग सकती?''

मुखिया ने ठग से कहा–''इनका कहना ठीक है या तो बंजारे का घोड़ा लौटाओ या एक हजार अशर्फियाँ दो।'' अब क्या था? पलट गया पासा। अछता–पछताकर ठग ने लौटाया बंजारे का घोड़ा। मुखिया ने ठगों को किया गाँव से बाहर। बंजारा बाबा की चतुराई की बड़ाई करता अपने डेरे में लौटा। जैसे बना बंजारे का काम, वैसे बनें सब के काम। इतना कहकर नानी ने खत्म की कहानी। बुधिया ने बजाई ताली।

शब्दार्थ–

घड़ी–घड़ी–पल–पल, थोड़े–थोड़े समय बाद। शकरपारा–शक्कर से बनी एक मिठाई। बंजारा–एक घुमन्तु (खानाबदोश) विशेष जाति का व्यक्ति। नेक–अच्छा। तेज तर्राट–तेज चलने वाला, फुर्तीला। डेरा–ठिकाना, रहने का स्थान। बियाबान–निर्जन। चौकन्नी–सतर्क। आवभगत–स्वागत, सत्कार। ठग–बातों में बहला फुसलाकर ठगने वाला। दम–साँस। मुखिया–गाँव का मुख्य व्यक्ति, ग्राम प्रमुख जिसके पास कुछ विशेष अधिकार होते हैं। झट– जल्दी, गवाह–साक्षी, किसी घटना को देखने वाला व्यक्ति। अशर्फी– प्राचीन स्वर्णमुद्रा, सोने के सिक्के। बड़ाई–प्रशंसा। अछता–पछताकर–विवश होकर।

1. बोध प्रश्न

(क) बंजारे ने बूढ़े आदमी की क्या मदद की थी?

(ख) बंजारा रात में कहाँ रुका था?

(ग) ठग ने क्या कहकर घोड़े को अपना बताया?

(घ) बूढ़े ने ठग पर क्या आरोप लगाया?

(ङ) बूढ़े बाबा ने ठग को कैसे झूठा सिद्ध किया?

2. नीचे लिखे प्रश्नों के चार सम्भावित उत्तरों में से सही उत्तर छाँटकर लिखिए–

1. बंजारे के पास कौन सा जानवर था?

   (क) ऊँट (ख) घोड़ा

   (ग) हाथी (घ) सियार

2. बंजारे ने बूढ़े बाबा को कहाँ से निकाला?

   (क) काँटों से (ख) कीचड़ से

   (ग) कुएँ से (घ) गड्ढे से

3. ठग के अनुसार घोड़े को किसने जन्म दिया था?

   (क) घोड़ी ने (ख) रस्सी ने

   (ग) खूँटे ने (घ) गाय ने

4. बंजारा किसे साथ लेकर मुखिया के पास गया?

   (क) व्यापारी को (ख) सिपाही को

   (ग) बूढ़े बाबा को (घ) साधु को

3. किसने किससे कहा :–

(क) उन ठगों को ऐसा सबक सिखाऊँगा कि जीवन भर याद रखेंगे। .....

(ख) मेरे खूँटे ने इस घोड़े को जन्म दिया है। .....

(ग) मैं जंगल में एक तालाब के किनारे रहता हूँ। .....

भाषा अध्ययन

1. सम्बन्ध जोड़िए और लिखिए:–

घोड़ा	मछली	–––––	–––––––
तालाब	लगाम	–––––	–––––––
सियार	खूँटा	–––––	–––––––
रस्सी	माँद	–––––	–––––––

2. इस शब्दजाल में दस जानवरों के नाम दिए गए हैं। नाम आड़े, खड़े और तिरछे भी हो सकते हैं? नाम पर घेरा बनाइये और लिखिए :–

ऊँ	इ	स	री	छ	हि
पा	ट	धा	ग	धा	र
ब	क	री	सि	गा	ण
गा	घो	ड़ा	या	बै	व
य	ल	शे	र	ल	रा
मी	हा	थी	न	शे	ना

जैसे – 1. ऊँट 2. ———

3. ——— 4. ———

5. ——— 6. ———

7. ——— 8. ———

9. ——— 10.———

3. नीचे लिखे मुहावरों के अर्थ समझकर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए।

(1) चैन की नींद सोना – बेफ्रिक होना

(2) हाँ में हाँ मिलाना – बिना सोचे समझे किसी बात का समर्थन करना।

(3) पासा पलटना – परिस्थिति बदल जाना

1. ———————————————————————————

2. ———————————————————————————

3. ———————————————————————————

4. इन वाक्यों को सही ढंग से लिखिए–

जैसे–(क) एक था बंजारा – एक बंजारा था।

(ख) इतना कहकर नानी हो गई चुप।

———————————————————————————

(ग) घोड़े ने पिया जी भर कर पानी।

———————————————————————————

(घ) उसका रास्ता गुजरता था जंगल से।

———————————————————————————

(ङ) ठग ने लौटाया बंजारे का घोड़ा।

———————————————————————————

5. सही विराम चिह्न लगाइए। (। – ! , ?)

(क) अरे तुम यहाँ

(ख) यह मेरा घर है

(ग) तुम कहाँ जा रहे हो

(घ) सुनूँगा सबकी करूँगा मन की

(ङ) बंजारा बहुत ही सीधा सच्चा था

योग्यता विस्तार

- चतुराई भरी ऐसी ही कोई दूसरी लोककथा सुनाइए।
- इस कहानी को अपनी स्थानीय बोली में सुनाइए।
- घोड़े के अलावा और कौन से जानवर सवारी के काम आते हैं? उनकी सूची बनाइए।
- बैल और ऊँट के मुँह में बाँधने वाली रस्सी को क्या कहते हैं? पता कीजिए।

सोचिए और आपस में चर्चा कीजिए–

अगर आप बूढ़े बाबा की जगह होते तो घोड़ा वापस लेने के लिए क्या करते ?

इस कविता को याद कीजिए–

अगर कहीं मैं घोड़ा होता,
वह भी लम्बा चौड़ा होता,
तुम्हें पीठ पर बैठा करके,
बहुत तेज मैं दौड़ा होता।
पलक झपकते ही ले जाता,
दूर पहाड़ों की वादी में,
बातें करता हुआ हवा से,
बियाबान में, आबादी में।